उत्तरपुस्तिका

उ० 1)A बिहाग

उ० 1)B पं० शारंगदेव

उ० 1)C ध्रुपद

उ० 1)D दीपचंदी

उ० 1)E ढोलक

उ० 2(1) परमेल प्रवेशक राग – जब कोई राग एक थाट से दूसरे थाट में प्रवेश करता है, तो उसे परमेल प्रवेशक राग कहते है। परमेल से अभिप्राय है- दूसरा मेल (थाट) जैसे !- राग जयजयवंती

2) **मुखड़ा** :- किसी भी गीत की पहली पंक्ति जिसे बार-2 दोहराया जाए या प्रत्येक अंतरे के बाद गाया जाए गीत का मुखड़ा कहलाता है।

3) **वर्ण** :- गाने की क्रिया को वर्ण कहते हैं। वर्ण के चार प्रकार हैं।

1) स्थाई 2) आरोही 3) अवरोही 4) संचारी

स्थाई → एक स्वर को बार-2 दोहराना स्थाई वर्ण कहलाता है।

आरोही → स्वरों को चढ़ते क्रम में प्रयोग करना आरोही वर्ण कहलाता है।

अवरोही → उतरते क्रम में स्वरों का प्रयोग करना अवरोही वर्ण कहलाता है।

संचारी → स्थाई, आरोही, अवरोही तीनों के मिश्रित रूप को संचारी वर्ण कहते हैं।

4. पूर्वांग - उत्तरांग → जिन रागों में "स रे ग म" इन स्वरों में से कोई स्वर वादी हो, उसे पूर्वांग प्रधान राग कहते है। इसमें पूर्व अंग प्रधान होता है।

पूर्वांग = पूर्व + अंग

उत्तरांग = जिन रागों में "प ध नि सं" इन स्वरों में से कोई स्वर वादी स्वर हो, उसे उत्तरांग प्रधान राग कहते है। इसमें उत्तर अंग प्रधान रहता है।

उत्तरांग = उत्तर + अंग

(2) मींड →

यह एक संगीतिक क्रिया है। दो स्वरों को इस प्रकार गाना या बजाना कि उनके बीच में कोई रिक्त स्थान न रहे। सितार पर एक स्वर से तार को अगले स्वर तक खींच कर ले जाने की क्रिया मींड कहलाती है।

चिन्ह → स रे (⌒)

(6) आलाप → किसी राग के स्वरों का धीरे-2 विस्तार करना आलाप कहलाता है। राग के स्वरों को ~~बिलम~~ विलम्बित लय में मंद्र से तार सप्तक तक बढ़त की जाती है।
ख्याल गायन शैली में आकार का आलाप और बोल आलाप भी किया जाता है।

(7) ग्राम →
सात स्वरों के व्यवस्थित क्रम को ग्राम कहते हैं। यह मूर्छनाओं का आधार है।
ग्राम तीन प्रकार के हैं:—
(1) षड़ज ग्राम
(2) मध्यम ग्राम
(3) गंधार ग्राम

उत्तर (3)

झप ताल

मात्राएं = 10
विभाग = 4 (2-3-2-3)
ताली = 1, 3, 8
खाली = 6
सम = पहली मात्रा

चिन्ह →	x		2			0		3		
मात्राएं →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
"एकगुन" बोल →	धिं	ना	धिं	धिं	ना	तिं	ना	धिं	धिं	ना
दुगुन →	धिंना	धिंधिं	नातिं	नाधिं	धिंना	धिंना	धिंधिं	नातिं	नाधिं	धिंना

"खेमटा ताल"

मात्राएं = 12
विभाग = 4 (3-3-3-3)
ताली = 1-4-10
खाली = 7
सम = पहली मात्रा पर

चिन्ह →	X			2			0			3		
मात्राएं →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
एकगुन बोल →	धा	टे	धीं	ना	ती	ना	ता	टे	धीं	ना	ती	ना
दुगुन →	धाटे	धींना	तींना	ताटे	धिंना	तींना	धाटे	धिंना	तींना	ताटे	धींना	तींना

उत्तर (4)

"तीन ताल" राग - बिहाग "रज़ाखानी गत" [दोनों मध्यम प्रयुक्त]

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
							स्थाई →								
								ग	मम	ग	स	नी़	सस	ग	म
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
प	-	मॅ	प	ग	मम	ग	स								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								नि़	सस	नि़	प़	नी़	सस	ग	म
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
प	-	मे	प	ग	मम	ग	स								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
							अन्तरा								
								ग	गग	म	म	प	पप	नी	नी
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सं	-	सं	सं	गं	गंगं	रें	सं								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								नी	संसं	नी	प	मॅ	पप	ग	म
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ग	मम	प	नी	संनी	धप	मग	रेस								
दा	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर								

"तोड़े"

" x से 8वीं मात्रा तक"

	x					2			
(1)	नीस	गम	पनी	सं-	|	संनी	धप	मग	रेस
(2)	गमे	पग	मेप	गम	|	गम	पमं	गरे	स-

उत्तर (5) →

शास्त्रीय संगीत	लोक संगीत
(1) शास्त्रीय संगीत नियमों में बंधा हुआ होता है।	(1) लोक संगीत जनसाधारण से जुड़ा हुआ है। इसमें
(2) इसमें लय व ताल का विशेष महत्व होता है। गायक व वादक को ताल का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।	(2) इसमें लय का महत्व रहता है। यह प्रांत विशेष की संस्कृति को दिखाता है।
(3) इसमें राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।	(3) इसमें शब्दों व भावों पर ध्यान दिया जाता है।
(4) शास्त्रीय संगीत साधारण लोगों की समझ से बाहर है।	(4) इसे सीखने के लिए अथक परिश्रम की आवश्यकता नहीं होती।
(5) इसमें कला पक्ष प्रधान रहता है।	(5) इसमें भाव पक्ष प्रधान रहता है व साहित्यिक पक्ष पर ध्यान दिया जाता है।
(6) इसे सीखने के लिए अभ्यास व कठिन परिश्रम करना पड़ता है।	

उत्तर ⑥ संगीत रत्नाकर

"संगीत रत्नाकर" भारतीय संगीत के एक अमूल्य निधि है। इसे सप्ताध्यायी भी कहते हैं। इसके रचियता पं. शारंगदेव जी हैं। यह कशमीरी ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान तथा संगीत प्रेमी थे। इनका समयकाल 1210 – 1247 ई० का माना जाता है। इन्होंने "संगीत रत्नाकर" को सात अध्यायों में बांटा है। जो कि निम्नलिखित हैं :-

① प्रथम अध्याय → स्वराध्याय

② द्वितिय अध्याय → रागाध्याय

③ तृतीय अध्याय → प्रकीर्णाध्याय

④ चतुर्थ अध्याय → प्रबन्धाध्याय

⑤ पंचम अध्याय → तालाध्याय

⑥ षष्ठ अध्याय → वाद्याध्याय

⑦ सप्तम अध्याय → नृत्याध्याय

① स्वराध्याय → इस अध्याय में नाद का स्वरूप, नाद के भेद, सारणा चतुष्टी ग्राम, मूर्च्छना, तान, निरूपण के बारे में बताया गया है।

② रागाध्याय → इस अध्याय में ग्राम, राग उनके विभाग, रागांग, भाषांग, देशी रागों के बारे में बताया गया है।

③ प्रकीर्णाध्याय → वाग्गेयकार के गुण-दोष, लक्षण, गीत के गुण व दोष स्थाई आदि का विवरण इस अध्याय में मिलता है।

④ प्रबन्धाध्याय → गान, गान के भेद, निबद्ध और अनिबद्ध गान प्रबंध के भेद तथा अंगों का वर्णन मिलता है।

⑤ तालाध्याय → इस अध्याय में तालों का वर्णन मिलता है।

6) वाद्याध्याय → तत, सुषिर, घन व अवनद्ध वाद्यों के भेद, वाद्यों की वादन विधि तथा वादकों के गुण-दोष का वर्णन इस अध्याय में है। यह वाद्यों के लिए समर्पित है।

7) नृत्याध्याय → यह नृत्य, नाट्य व नृत्त पर आधारित है। इसमें नर्तन सम्बन्धी प्रत्येक जानकारी दी गई है।

यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार ग्रंथ है। जो आजतक संगीत क्षेत्र का मार्गदर्शन कर रहा है।

उत्तर 7→ ①

पं. हरिप्रसाद चौरसिया

इनका जन्म 1 जुलाई 1938 ई० को उ० प्रदेश के इलाहबाद जिले में हुआ। यह भारतीय शास्त्रीय जगत में बांसुरी वादन के लिए प्रसिद्ध हैं। 5 वर्ष की उम्र में इनकी माता जी का निधन हो गया। इनके पिता पहलवान थे, तथा इन्हें भी पहलवान बनाना चाहते थे। परन्तु इनकी रूचि संगीत में थी। सर्वप्रथम इन्होंने तबला वादन सीखना प्रारंभ किया।

संगीत शिक्षा → इनकी संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा पं० राजा राम गीतज्ञ जी से शुरू हुई। इन्होंने बांसुरी वादन वाराणसी से भोलानाथ प्रसन्ना जी से सीखना आरम्भ किया।

1951 ई० में All India Radio कटक ओड़िसा से जुड़े तथा वहां संगीतकार के रूप में कार्य किया। 8 वर्षों तक बांसुरी वादन सीखा। संगीत में उत्कृष्टता हासिल करने की खोज इन्हें बाबा अलाउद्दीन खां की सुयोग्य पुत्री एवं शिष्या "अन्नपूर्णा देवी" की शरण में ले गई। अन्नपूर्णा देवी की शार्गिदगी में इनकी प्रतिभा में और निखार आया। इनके संगीत को जादुई स्पर्श मिला।

कार्य क्षेत्र → पं जी ने बांसुरी वादन से भारतीय शास्त्रीय संगीत को अलग पहचान दी। इसके माध्यम से संगीत लोकप्रिय हो गया। इन्होंने "शिव कुमार शर्मा" के साथ मिलकर "शिव हरि" नाम से हिंदी सिनेमा में मधुर संगीत दिया।

सम्मान एवं पुरस्कार → इन्हे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा गया।

संगीत नाटक अकादमी
अन्य सम्मान
पद्म भूषण
पद्म विभूषण
हाफिज अली खां पुरस्कार
राष्ट्रीय कालीदास सम्मान

प्रसिद्ध पुस्तकें →

1. Hariprasad chourasiya and the art of improvisation
2. बांसुरी सम्राट
3. Wood brings of change.

उत्तर - 7 - 2

"पं० रवि शंकर जी"

पं. जी का जन्म 7 अप्रैल 1920 ई० में बनारस में हुआ। यह एक प्रसिद्ध सितार वादक थे। इनकी संगीत शिक्षा उस्ताद अलाउद्दीन खां जी की शरण में हुई। 10 वर्ष की आयु में यह अपने भाई उदय शंकर नृत्य मंडली में Paris गए तथा देश-विदेश में कार्यक्रम में भाग लेने लगे। सन् 1938 से यह उस्ताद अलाउद्दीन खाँ से शिक्षा ग्रहण करने लगे। 1944 तक इन्होंने सितार वाद्य में महारत हासिल कर ली। इसके पश्चात् इन्होंने स्वतंत्र तौर पर सितार पर कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

इन्होंने सितार में खरज की तार को जोड़कर मंद्र व अति मंद्र सप्तक के स्वरों का लगाव बढ़ा दिया। इन्होंने Indian People Theater Association में काम किया तथा फिल्मों में संगीत भी दिया। 1950 में All India Radio Delhi में निर्देशक बनने का मौका मिला। देश-विदेश में इन्होंने शास्त्रीय संगीत को पाश्चात्य संगीत के साथ मिलाकर कई धुनों पर ORCHESTRA का प्रदर्शन किया।

इन्होंने राजनीतिक के रूप में भी कार्य किया। "हैरिसन" ने रविशंकर जी को The GOD of World Music के रूप में संबोधित किया।

इनका विवाह अलाउद्दीन खां जी की पुत्री अन्नपूर्णा के साथ हुआ।

सम्मान व पुरस्कार → संगीत नाटक अकादमी, पद्म भूषण, पद्म विभूषण, भारत रत्न, ग्रैमी अवार्ड, Concert of Bangladesh के लिए Album of the year, Lifetime Achievement Award भी जीता।

इन्होंने सितार वाद्य तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत को देश-विदेश में एक अलग पहचान दी।

11 दिसम्बर 2012 को कैलिफोर्निया में इनकी मृत्यु हो गई। 5 व 6 जनवरी 2013 को स्वर सम्राट फेस्टिवल का आयोजन किया गया जो कि रवि शंकर जी व अली अकबर खां जी को समर्पित था।